©RYKYM

क्रियायोग-रहस्य

SAMPLE

लेखक

योगाचार्य माहेश्वरी प्रसाद दूबे

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION
Service to Atman is Service to Param Atman
स उ प्राणस्य प्राणः

राजयोग क्रियायोग मिशन

भद्रकाली, हुगली, पश्चिम बंगाल

©RYKYM

क्रियायोग-रहस्य

श्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय के क्रियायोग पर एक विहंगम दृष्टि

SAMPLE

ॐ

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

क्रियायोग पर अनेक लोगों ने बांग्ला भाषा में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। श्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय की जीवनी हिंदी और बांग्ला दोनों भाषाओं में लिखी गई है। श्री लाहिड़ी महाशय द्वारा प्रचारित इस क्रियायोग के विषय में लिखने के लिए कुछ विशेष नहीं है; इसमें जो कुछ है, वह सब कुछ करने का ही है। कुछ क्रियावानों के आग्रह के कारण मैंने इस पर थोड़ा प्रकाश डाला है। नए क्रियावानों द्वारा क्रिया किस क्रम से की जाए, इसकी जानकारी इसमें दी गई है एवं उच्च क्रियावानों को प्रेरणा देने के लिए क्रिया की कुछ उपलब्धियों का भी जिक्र इसमें किया गया है।

आशा है कि क्रियावान इससे कुछ प्रेरणा पाएंगे। यही इस पुस्तक का लक्ष्य है।

श्री गुरु चरणार्पितम्

—माहेश्वरी प्रसाद दूबे

॥ श्री गुरवे नमः ॥

©RYKYM

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

यह संसार है। इसमें सृष्टि के प्रारंभ से अनंत जीव अपने कर्मों का भोग कर रहे हैं। कृमि से लेकर देवताओं तक सभी अपने-अपने ढंग के भोग भोगने में संलग्न हैं। सभी ईश्वर की माया के वशीभूत हैं। हमारे शास्त्रों के अनुसार सृष्टि के आरंभ होने के पूर्व केवल अविनाशी ब्रह्म ही सर्वत्र विद्यमान था। उपरांत उसकी त्रिगुणात्मक प्रकृति के द्वारा सृष्टि का विस्तार हुआ। सांख्य के अनुसार *सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः* अर्थात् तीनों गुणों की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं। इन्हीं गुणों में से सर्वप्रथम सतोगुण का विकास हुआ और देवताओं आदि की प्रथम सृष्टि हुई। ब्रह्माजी का प्रथम प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपने संकल्प द्वारा ऋषियों और देवताओं को उत्पन्न किया। फिर उन्होंने इस सृष्टि को और व्यापक बनाने के लिए संकल्पात् सृष्टि को मैथुनी सृष्टि का रूप दिया। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने संकल्प से पुरुष एवं स्त्री का जोड़ा (मनु शतरूपा) उत्पन्न किया और उन्हें प्रजा की सृष्टि करने का आदेश दिया। सृष्टि बढ़ने लगी। इसमें अनगिनत जीवात्माएँ आकर अपने कर्मों के अनुसार नाना प्रकार की योनियों में प्रवेश कर सृष्टि की आवश्यकताओं को पूर्ण करने लगीं। हमारे शास्त्रों के अनुसार स्थूल सृष्टि में सबसे पहले मानव की उत्पत्ति हुई। परंतु आज का विज्ञान इसके विपरीत एककोशीय जीव की रचना को सृष्टि का प्रथम जीव मानता है। जो भी हो, हमारा शास्त्र ही हमें विश्वसनीय मालूम पड़ता है। एक बात तो अब सभी स्वीकार करते हैं कि कीट, पतंग एवं वनस्पतियों तक में प्राण का अवस्थान है। अर्थात् यहाँ सब कुछ प्राणमय है। शास्त्रों में तो पहले से ही *सर्वं प्राणमयं जगत्* का वाक्य गूँजता रहा है।

SAMPLE

अतएव संसार में जितने रूप दिखाई पड़ते हैं, उन सब में आत्मा है। यह आत्मा क्या है, इसे जानना आवश्यक है। हम देखते हैं कि जब कोई जीव मरता है, तो उसका स्थूल शरीर विनाश को प्राप्त हो जाता है, परंतु जिसके रहने से उसमें गतिशीलता थी, वह प्राण उस शरीर को छोड़कर कहाँ चला जाता है एवं उसका स्वरूप क्या है, इसे जानने का कोई प्रयत्न नहीं करता। यह प्राण ही सब कुछ है। हम भोजन करते हैं, परंतु हमारी जानकारी के बिना ही वह अपने आप पेट में पचता है तथा उस पचे हुए भोजन के रस से शरीर के लिए आवश्यक तत्त्व (रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी, वीर्य आदि) स्वतः बन जाते हैं। ये सब प्रक्रियाएँ कौन करता है? हमारे शरीर में वह कौन है, जो भोजन का स्वाद ग्रहण करता है? वह कौन है जो हमारे हृदय और श्वास को चलाता है? जिसके न रहने पर शरीर मृत हो जाता है, वह शक्ति क्या है? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है—'प्राण'। यह प्राण

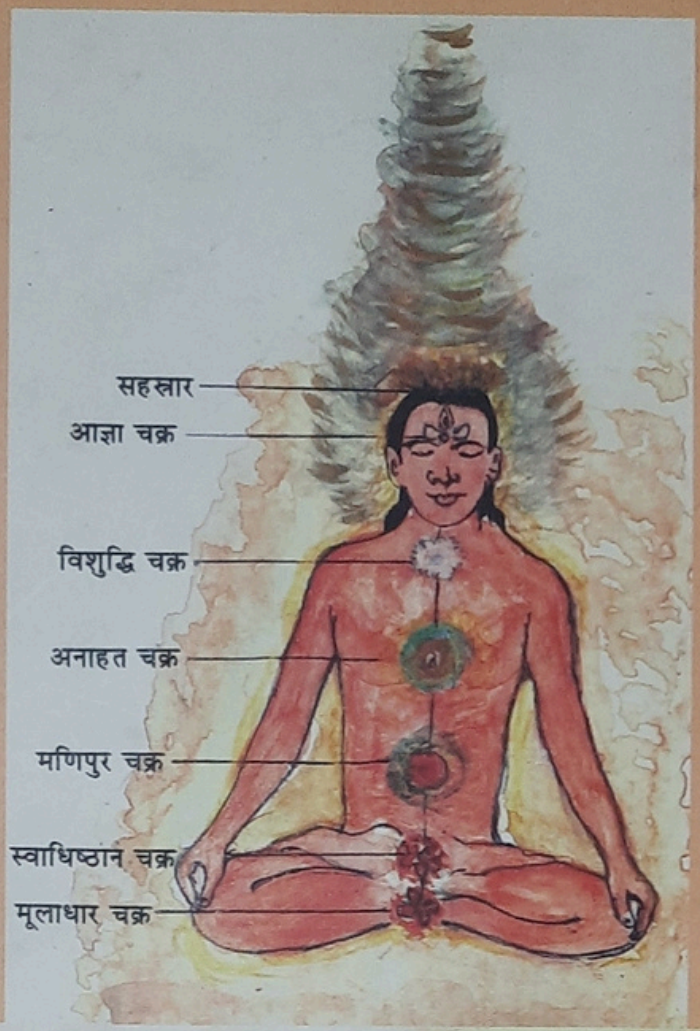

योगाचार्य डॉ. सुधीन राय द्वारा अंकित चित्र

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION

Service to Atman is Service to Param Atman

स उ प्राणस्य प्राणः

राजयोग क्रियायोग मिशन

भद्रकाली, हुगली, पश्चिम बंगाल